अशोक की विदेश-नीति

foreign policy of Ashoka

(1)

नोट:- अशोक का उत्तराधिकारी) कुणाल, दशरथ, सम्प्रति, शालिशुक, अंतिम शासक- बृहद्रथ उसके सेनापति पुष्यमित्र हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।

अपने शासनकाल के प्रथम तेरह वर्षों में अशोक ने मौर्य साम्राज्य की परम्परागत नीति का ही अनुसरण किया। उसने भारत के अन्दर अपने साम्राज्य के विस्तार और विदेशी शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार की नीति अपनाई। चन्द्रगुप्त और बिन्दुसार की तरह अशोक भी देशी शक्तियों के लिए आक्रामक और विदेशी शक्तियों के लिए मित्र रहा। भारत के अन्दर अशोक की दिग्विजय नीति का परिणाम कलिंग का युद्ध था। किन्तु इस युद्ध के बाद उसने भारत की सीमाओं के अन्दर भी दिग्विजय की नीति छोड़ दी। कलिंग अभिलेख में अशोक ने स्वयं घोषणा की कि सीमान्त स्वतंत्र राज्य उससे भयभीत न हो और विश्वास रखें कि उन्हें अशोक से सुख की प्राप्ति होगी। उसने स्वीकार किया कि धम्म-विजय सबसे बड़ी विजय है और आशा व्यक्त की कि उसके उत्तराधिकारी भी धम्म विजय की नीति अपनायेंगे। उसने स्पष्ट घोषणा की कि जिन प्रदेशों को मैंने नहीं जीता है, जानना चाहते हैं कि मेरी क्या इच्छा है तो उन्हें बतला दिया जाये कि उनके प्रति मेरी यह इच्छा है कि मेरे कारण वे किसी प्रकार चिन्तित न हो। मेरे मे विश्वास रखें। उन्हें सुख ही मिलेगा। किन्तु वे यह भली प्रकार समझ ले कि मैं उनको एक सीमा तक ही क्षमा कर सकता हूँ"। अशोक ने चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्र, केरलपुत्र और ताम्रपर्णी को जीतने का प्रयास नहीं किया। उसने विदेशी शासकों के साथ भी मित्रता का सम्बन्ध रखा।

इस प्रकार अशोक का बाहरी ~~राज्य~~ राज्यों के

Scanned with CamScanner

के साथ मैत्री, सौहार्दपूर्ण सहयोग और सह-अस्तित्व का सम्बन्ध था। अपने राज्य के साथ-साथ वह समान रूप से बाहरी राष्ट्रों की हित कामना के लिए भी प्रयत्नशील था। निश्चय ही उसकी इस नीति ने बाहरी देशों के साथ भारत के सम्बन्ध दृढ़ कर दिये थे। अशोक की इस नीति का आधार था उसकी घोषित "सर्वकल्याण अर्थात विश्वकल्याण की कामना" और सब प्राणियों के प्रति सुरक्षा, संयम, समुचित और मृदुता के व्यवहार की सक्रिय भावना, जिसके लिए अशोक जीवन पर्यन्त प्रयत्न करता रहा।

Next

अशोक का शासन-प्रबन्ध

Scanned with CamScanner